National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 154-156
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

गौ महिमा

सीताशरण नौटियाल

सीताशरणनौटियाल
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
हिमालयीय विश्वविद्यालय,
देहरादून

Correspondence:
सीताशरणनौटियाल
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
हिमालयीय विश्वविद्यालय,
देहरादून

गवां हि तीर्थे वसतीह गंगा।
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्म-
स्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्।।[1]

‘गौ रूपी तीर्थ में गंगा आदि सभी नदियों तथा तीर्थों का आवास है, उसकी परम पावन धूलि में पुष्टि विद्यमान है, उसके गोबर में साक्षात् लक्ष्मी विराजमान है और उसे प्रणाम करने से धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करने योग्य है।’

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्।।[2]

‘गौएँ स्वर्ग की सीढ़ी हैं, गौएँ स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं, गौएँ समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली देवियाँ हैं, उनसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।’

पितरो वृषभा ज्ञेया गावो लोकस्य मातरः।
तासां तु पूजया राजन् पूजिताः पितृदेवताः।।[3]

‘राजन्! बैलों को जगत् का पिता समझना चाहिये और गौएँ संसार की माता हैं। उनकी पूजा करने से सम्पूर्ण पितरों और देवताओं की पूजा हो जाती हैं।’

सभा प्रपा गृहाश्चापि देवतायतनानि च।
शुद्ध्यन्ति शकृता यासां किं भूतमधिकं ततः।।[4]

‘जिनके गोबर से लीपने पर सभा-भवन, पौंसले, घर और देव मन्दिर भी शुद्ध हो जाते हैं, उन गौओं से बढ़कर और कौन प्राणी हो सकता है?’

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्।।[5]

‘वीर नरेश! गायों के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गायों का दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है और इनसे सम्पूर्ण पापों का नाश तथा परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुंचति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति।।[6]

‘गौओं का समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थान की शोभा बढ़ा देता है और वहाँ के सारे पापों को खींच लेता है।’

गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवति नित्यशः।
अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।
गवां रजः खुरोद्भूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।[7]

'जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गौ का स्पर्श करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो गौओं के खुरसे उड़ी हुई धूलि को सिर पर धारण करता है, वह मानो तीर्थ के जल में स्नान कर लेता है और सभी पापों से छुटकारा पा जाता है।'

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति
गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्।।[8]

'स्पर्श कर लेने मात्र से ही गौएँ मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट कर देती हैं और आदरपूर्वक सेवन किये जाने पर अपार सम्पत्ति प्रदान करती हैं। वे ही गायें दान दिये जाने पर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं। ऐसी गौओं के समान और कोई भी धन नहीं है।'

गोप्रचारं यथाशक्ति यो वै त्यजति हेतुना।
दिने दिने ब्रह्मभोज्यं पुण्यं तस्य शताधिकम्।।
तस्माद् गवां प्रचारं तु मुक्त्वा स्वर्गान्न हीयते।
यश्छिनति द्रुमं पुण्यं गोप्रचारं छिनत्त्यपि।।
तस्यैकविंशपुरुषाः पच्यन्ते रौरवेषु च।
गोचारघ्नं ग्रामगोपः शक्तो ज्ञात्वा तु दण्डयेत्।।[9]

'जो मनुष्य गौओं के लिये यथाशक्ति गोचरभूमि छोड़ता है, उसको प्रतिदिन सौ से अधिक ब्राह्मण भोजन का पुण्य प्राप्त होता है। गोचर भूमि छोड़ने वाला कोई भी मनुष्य स्वर्ग से भ्रष्ट नहीं होता। जो मनुष्य गोचर भूमिको रोक लेता है और पवित्र वृक्षों को काट डालता है, उसकी इक्कीस पीढ़ी रौरव नरक में गिरती हैं। जो व्यक्ति गौओं के चरने में बाधा देता है, समर्थ ग्राम रक्षक को चाहिये कि उसे दण्ड दे।'

तासां प्रचारभूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानवः।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्।।[10]

गौओं के चरने के लिये गोचर भूमिकी व्यवस्था करके मनुष्य निःसन्देह अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है।'

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्।।[11]

'(यमराज ने जनक से कहा-) राजन्! एक बार तुमने चरती हुई गाय के कार्य में विघ्न डाला था, उसी पाप के कारण तुम्हें नरक का द्वार देखना पड़ा।'

घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः।
अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकम्।।[12]

'जो एक वर्ष तक प्रतिदिन स्वयं भोजन के पहले दूसरे की गाय को एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।'

तृणोदकादिसंयुक्तं यः प्रदद्यात् गवाह्निकम्।।
सोऽश्वमेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः।[13]

'जो गौओं को प्रतिदिन जल और तृणसहित भोजन प्रदान करता है, उसे अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है, इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है।'

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने।
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपः सु च।।
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने।
भुवः पर्यटने यत्तु वेदवाक्येषु सर्वदा।।
यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षया च लभेन्नरः।
तत्पुण्यं लभते सद्यो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च।।

'तीर्थ स्थानों में जाने से, ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो पुण्य प्राप्त होता है, सभी व्रत-उपवासों एवं तपस्याओं में जो पुण्य है, महादान करने में जो पुण्य है, श्रीहरि के पूजन में जो पुण्य है, पृथ्वी की परिक्रमा करने में जो पुण्य है, वेद वाक्यों के पठन-पाठन में जो पुण्य है और समस्त यज्ञों की दीक्षा ग्रहण करने में जो पुण्य है, वे सभी पुण्य मनुष्य को केवल गायों को तृण खिलाने मात्र से तत्काल मिल जाते हैं।'

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्।।
द्रुहोन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः।
अर्नयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्।।
दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टि तथाश्नुते।[14]

'जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उस पर सन्तुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओं के साथ मन से भी कभी द्रोह न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये, उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदि के द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओं की सेवा करता है वह समृद्धि का भागी होता है।'

तासामौषधदानेन विरोगस्त्वभिजायते।
विप्रमोच्य भयेभ्यश्च न भयं विद्यते क्वचित्।।[15]

'रुग्णावस्था में गौओं को ओषधि प्रदान करने से मनुष्य स्वयं भी सभी रोगों से मुक्त हो जाता है। गौओं को भय से मुक्त कर देने पर मनुष्य स्वयं भी सभी भयों से मुक्त हो जाता है।'

उपसंहार

स्वराज्य-प्राप्ति से पहले जितनी गोहत्या होती थी, उससे बहुत गुना अधिक गोहत्या आज होती है। चमड़े के निर्यात में भारत का मुख्य स्थान है। पशुओं को निर्दयतापूर्वक बड़ी तेजी से नष्ट किया जा रहा है। गायों का तो वंश ही नष्ट हो रहा है। पैसों के लोभ से बड़ी मात्रा में गोमांस का निर्यात किया जा रहा है। रूपयों के लोभ से बुद्धि इतनी

भ्रष्ट हो गयी है कि पशुओं के विनाश को 'मांस-उत्पादन' माना जा रहा है। भेड़-बकरियों, मछलियों, मुर्गियों आदि का तो पालन और संवर्धन किया जा रहा है, पर जिनका गोबर गोमूत्र भी उपयोगी होता है, उन गायों की हत्या की जा रही है। खुद में अक्ल नहीं और दूसरे की मानते नहीं - यह दशा हो रही है।

रूपयों से वस्तुएँ श्रेष्ठ हैं, वस्तुओं से पशु श्रेष्ठ हैं, पशुओं से मनुष्य श्रेष्ठ हैं, मनुष्यों में भी विवेक श्रेष्ठ है और विवेक भी सत्-तत्त्व (परमात्मतत्त्व) श्रेष्ठ है। परन्तु आज सत्-तत्व की उपेक्षा हो रही है, तिरस्कार हो रहा है और असत्-वस्तु रूपयों को बड़ा महत्व दिया जा रहा है। रूपयों के लिये अमूल्य गोधन को नष्ट किया जा रहा है। गायों से रूपये पैदा किये जा सकते हैं, पर रूपयों से गायें पैदा नहीं की जा सकतीं। गायों की परम्परा तो गायों से ही चलती है। जब गायें नहीं रहेंगी, तब रूपयों से क्या होगा? उलटा देश निर्बल और पराधीन हो जायगा। गायें भी खत्म हो जायेंगी, रूपये भी। रूपये तो गायों के जीवित रहने से ही पैदा होंगे। गायों को मारकर रूपये पैदा करना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी तो इसी में है कि गायों की वृद्धि की जाये। गायों की वृद्धि होने से दूध, घी आदि की वृद्धि होगी, जिनसे मनुष्यों का जीवन चलेगा, उनकी बुद्धि बढ़ेगी। बुद्धि बढ़ने से विवेक को बल मिलेगा, जिससे सत्-तत्त्व की प्राप्ति होगी। सत्-तत्त्व की प्राप्ति होने पर पूर्णता हो जायेगी। अर्थात् मनुष्य कृतकृत्य, ज्ञात-ज्ञातव्य और प्राप्त-प्राप्तव्य हो जायेगा। इतिशम्

सन्दर्भ ग्रन्थः

[1] विष्णुधर्मोत्तर॰ 2/42/58

[2] महाभारत, अनु॰ 51/33

[3] महाभारत, आश्व॰ वैष्णव॰

[4] महाभारत, आश्व॰वैष्णव॰

[5] महाभारत, अनु॰ 51/27

[6] महाभारत, अनु॰ 51/32

[7] पद्मपुराण, सृष्टि॰ 57/164-165

[8] बृहत्पराशरस्मृति 5/10

[9] पद्मपुराण, सृष्टि॰ 59/38-40

[10] विष्णुधर्मोतर॰ खण्ड 3, अ॰ 291

[11] पद्मपुराण, पाताल॰ 31/8

[12] महाभारत, अनु॰ 69/12

[13] बृहत्पराशरस्मृति 5/26-27

[14] महाभारत, अनु॰ 91/33-35

[15] विष्णुधर्मोत्तर॰ खण्ड 3, अ॰ 291